International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कारगिल शहीद सुरेश सिंह

शोधार्थी, सज्जन सिंह,
इतिहास विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

ग्राम सहड़ का परिचय

देश में कहीं भी वीरता की बात आती है तो सबसे पहले राजस्थान के झुंझुनूं जिले के शूरवीरों का नाम जरूर आता है। पाकिस्तान के साथ वर्ष 1965 का युद्ध हो या वर्ष 1971 का या फिर कारगिल में "ऑपरेशन विजय" हो। हर बार इस जिले के बेटों ने अपनी वीरता को साबित किया है। जीत के बाद कोई अपने सिर पर विजय की पताका लेकर घर आया तो कोई अपने देश के लिए तिरंगे में लिपटकर घर आया। जब उन के बेटे बड़े हो गए तो वे उन के सपनों को पूरा कर रहेहैं। कोई अपने पिता की तरह देश की सरहद पर भारत माँ की रक्षा कर रहा है तो कोई जरुरतमन्दो की सेवा में जुटा है।

झुंझुनूं वर्तमान में राजस्थान के जिस भू–भाग पर स्थित है। यह स्थान पौराणिक काल के ग्रथों में जांगल प्रदेश कहलाता था। भारत की आन, राजस्थान की शान, शेखावाटी का सिरमौर है–झुंझुनूं जिला। यह जिला पूर्वी देशांतर 75°02′ से 76°06′ पर स्थित है। इसका भोगौलिक क्षेत्रफल 5928 वर्ग किलोमीटर है। आठ तहसीलों वाले इस जिले को भारतीय सेना में सर्वाधिक सैनिक भागीदारी कर देश सेवा का गौरव प्राप्त है।

कारगिल युद्ध 26 जुलाई का दिन हर एक भारतीय को गर्व करने का दिन रहा है। जब हमारे वीर योद्धाओं ने लगभग 74 दिन तक चली जंग लश्कर पाकिस्तान के धोखे का जवाब कारगिल की सफेद बर्फ से ढकी पहाड़ियों पर तिरंगा फहराकर दिया था। इस युद्ध में हमारे देश में लगभग 527 योद्धाओं को खोया और वहीं 1300 से ज्यादा घायल हुए इन शहीदों ने भारतीय सेना की शौर्य व बलिदान की उस सर्वोच्च परम्परा का निर्वाह किया, जिसकी सौगन्ध हर सिपाही तिरंगे के सामने लेता है। सन् 1971 के बाद भी भारत और पाकिस्तान के बीच समय–समय पर तना–तनी का माहोल रहा है। दोनों देशों की ओर से परमाणु परीक्षण किये जाने पर और तनाव बढ़ गया था। स्थिति को शांत करने के लिए दोनो देशों ने फरवरी 1999 में लाहौर में घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किये जिसमें कश्मीर मुद्दे को वार्ता में शांतिपूर्वक ढंग से हल करने का वादा किया गया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

था लेकिन पाकिस्तान अपने सैनिक और अर्धसैनिक बलों को छिपाकर नियन्त्रण रेखा के पार भेजने लगा और इन्ही घुसपैठ का नाम "ऑपरेशन बद्र" रखा था। इसका मुख्य उद्देश्य कश्मीर और लद्दाख के बीच की कड़ी को तोड़ना और भारतीय सेना को सियाचीन ग्लेशियर से हटाना था। पाकिस्तान ये भी मानता है कि इस क्षेत्र मे किसी भी प्रकार के तनाव से कश्मीर मुद्दे को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा बनाने में मदद मिलेगी। प्रारम्भ में इसको घुसपैठ मान लिया जाता था और दावा किया गया कि कुछ ही दिनों में इनको बाहर कर दिया जायेगा लेकिन नियंत्रण रेखा में खोज के बाद और घुसपैठियों की नियोजित रणनीति एवं षड्यंत्र का पता चलने के बाद भारतीय सेना को अहसास हो गया कि हमले की योजना बहुत बड़े पैमाने पर कि गई थी। इसके बाद भारत सरकार ने "ऑपरेशन विजय" नाम से दो लाख सैनिको को कश्मीर भेजा। इस युद्ध में अनेक वीर योद्धा शहीद हुए जिसमें शेखावाटी के झुंझुन जिले के सर्वाधिक जवान शहीद हुए थे, जिसमें से शहीद हवासिंह भी एक थे।

ग्राम सहड़ झुंझुनूं जिले की बुहाना तहसील में स्थित है।झुंझुनूं जिले की पूरी बुहाना तहसील सांस्कृतिक रूप से विधिवत विविधता लिए हुए है। क्योंकि इस तहसील की सीमा हरियाणा राज्य से लगती है। ग्राम सहड़ का वातावरण भी हरियाणा राज्य से थोड़ा मिलता–जुलता प्रतीत होता है। जिला मुख्यालय से बुहाना तहसील पूर्व दिशा की तरफ 58.7 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। वही ग्राम सहड़ व जिले के बीच की दूरी 77 किलोमीटर है। जो कि जिले से दक्षिण पूर्वी दिशा की तरफ स्थित है। इस तहसील मे लगभग 137 ढाणीयों व ग्रामों को शामिल किया जाता है। जिसमें सहड़ गांव तहसील बुहाना से दक्षिण पूर्वी दिशा की ओर बसा है। इसका क्षेत्रफल 545.91 हैक्टेयर है। ग्राम की कुल जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार 2145 है। जिसमें स्त्रियों व पुरुषों की संख्या क्रमशः 1058 व 1087 है। ग्राम सहड़ लंबी अहीर ग्राम पंचायत में शामिल है। इस ग्राम की मिट्टी उपजाऊपन लिए हुए है। इसलिए यहां पर रबी की अच्छी फसल होती है, जिसमें सरसों की खेती का क्षेत्रफल अधिक रहता है। इसके अलावा गेहूं, जौ, चना व मटर की खेती भी की जाती है। खरीफ की फसल में मोटे अनाज की फसल का उत्पादन किया जाता है। जिसमें ग्वार, बाजरा, मोठ, मूंग व मूंगफली की खेती की जाती है। बुहाना तहसील के सीमावर्ती ग्रामो में 2 राज्यों की संस्कृति का मिश्रण देखने को मिलता है। जिसमें भाषा, रहन–सहन व पहनावा हरियाणा राज्य का प्रतीत होता है तो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वही राजस्थान राज्य की संस्कृति भी देखने को मिलती है। बुहाना तहसील के आमजन हरियाणा राज्य में भी रिश्ते नाते करते है जिससे राजस्थान व हरियाणा राज्य की संस्कृति का आदान–प्रदान स्वभाविक है। यहां की भाषा, पहनावा पड़ोसी राज्य से मिलता जुलता है।ग्राम सहड़ से बड़े कस्बे के रुप में सुरजगढ़ तहसील भी 27 किलोमीटर दूरी पर ही है।

जन्म व परिवार

ग्राम सहड़ में प्रवेश करते ही किसी भी व्यक्ति से पूछने पर शहीद सुरेश सिंह का नाम बड़े सम्मान व गर्व से लिया जाता है। शहीद सुरेश सिंह के घर पहुचने के लिए पूरा ग्राम चलने के बाद लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर अपने खेत में पक्का मकान दिखाई देता है। जब मै इनके घर पहुचा तो वहां पर इनके छोटे भाई महिपाल यादव व इनके माता–पिता से मिला। सिपाही सुरेश सिंह यादव का जन्म झुझुनू जिले की बुहाना तहसील में ग्राम सहड़ में दिनांक 31 दिसंबर, 1976 को हुआ था। इनके पिता का नाम रंगलाल व माता श्रवण देवी है। रंगलाल अपने तीन भाइयों में सबसे छोटे है। रंगलाल के परिवार का नाता भारतीय सेना से पहले भी रहा है। रंगलाल के बड़े भाई लालचंद यादव की भारतीय थल सेना में अपनी सेवाएं दे चुके है। जिन्होंने वर्ष 2004 में भारतीय थल सेना से सेवानिवृत्त हो गए थे। रंगलाल यादव की शादी नाकता, पचेरी खुर्द निवासी श्रवण देवी के साथ हुई थी। शहीद सुरेश सिंह के पिता ने भी माध्यमिक तक की शिक्षा ग्रहण की थी। श्रवण देवी के 2 संतानों ने जन्म लिया। जिनमें बड़े बेटे का नाम सुरेश सिंह व छोटे बेटे का नाम महिपाल रखा गया।

इनके भाई महिपाल यादव बताते है कि हम दोनो भाई बचपन से ही चंचल,फुर्तीले व ईमानदार रहेहै। शहीद सुरेश सिंह का बचपन ग्राम की गलियों में सामान्य पारिवारिक परिस्थितियों में गुजरा था। इनकी माता अपने बेटे को छोटी–छोटी यादों को याद कर आज भी अपनी आंखे भर लेती है। शहीद सुरेश सिंह बचपन से ही कबड्डी व फुटबॉल के अच्छे खिलाड़ी रहे थे।

शिक्षा

शहीद सुरेश सिंह की प्राथमिक शिक्षा अपने पैतृक ग्राम सहड में हुई थी। आपने वही से उच्च प्राथमिक तक की शिक्षा को ग्रहण किया था। उस समय आपके ग्राम में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उच्च प्राथमिक तक की ही स्कूल होने के कारण आपने माध्यमिक तक की शिक्षा को पास के ग्राम पचेरी कला मे स्थित माध्यमिक विद्यालय से उत्तीर्ण की थी। इनके ग्राम से पचेरी कला 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

सेना का सफर

शहीद सुरेश सिह का मानना था कि मातृभूमि की सेवा करने से बढ़कर कोई कार्य इस दुनिया मे नही है। दसवी कक्षा के उत्तीर्ण करने के बाद आपने भारतीय सेना मे भर्ती होने की ठानी।सन् 1996–97 में वर्तमान की तरह सेना भर्ती की तैयारी के लिए आसपास अकादमी संचालित नही थी। आप इस समय से ही कबड्डी व फुटबॉल के अच्छे खिलाड़ी रहे थे। जिस कारण शारीरिक दक्षता की तैयारी तो खेल–खेल में ही कर लेते थे। कोई भी खेल हो खिलाड़ी को अनुशासन में रहना पड़ता है। इसलिए आप मै कभी भी अनुशासन की कमी नही देखी गई। आपने सपनो को हकीकत मे बदलने के लिए कड़ी मेहनत की थी। आप अपने मित्र सुरेद्र व वीरेद्र के साथ तैयारी मे लगातार जुटे रहे। 21 वर्ष की आयु में आपने अपने सपने को हकीकत में बदल लिया। आप 26 जून, 1997 को झुझुनू बीआरओ में चल रही भर्ती मे चयनित हुए और सेना मे 13 कमाऊ रेजीमेंट मे सिपाही बने थे।इन्होंने भारतीय थल सेना का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। शहीद सुरेश सिंह भारतीय सेना में 4190932 नंबर के जवान थे।इन्होंने सेना में रहते हुए ग्लेशियर मेडल वर्ष 1997 में तथा ऑपरेशन में वीरता का प्रदर्शन करने पर सेना मेडल से सम्मानित किया गया था। सेना में 2 वर्ष के कार्यकाल में आप की तैनाती ग्लेशियर व जम्मू–कश्मीर मे रही।

विवाह व बच्चे

शहीद सुरेश सिंह का विवाह वर्ष 1995 में अहिरों की ढाणी, तहसील खेतड़ी निवासी गोकुलरामकी पुत्री शर्मीला से हुआ था। आपके मन मे देश सेवा का जज्बा जिम्मेदारियों की वजह से कम नही हुआ। आपको वीरांगना शर्मिला से दो पुत्रियों ने जन्म लिया। जिसमे बड़ी बेटी ममता यादव व छोटी बेटी प्रीति यादव है। शहादत के समय बड़ी बेटी ममता की उम्र 2 वर्ष तथा प्रीति की उम्र 2 माह 15 दिन थी। वर्तमान में ममता ने राजनीति विज्ञान से मास्टर डिग्री तक की शिक्षा ग्रहण कर ली, वही प्रीति

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यादव ने जयपुर से मेडिकल की तैयारी कर 17 वर्ष की आयु में सफलता हासिल कर ली। आज वह एल.एच.एम.सी. मेडिकल कॉलेज दिल्ली में तृतीय वर्ष की छात्रा है। वीरांगना शर्मिला देवी भी प्रारंभिक कक्षा तक पढ़ी लिखी है जिस कारण पढ़ाई के महत्व को अच्छी तरीके से जानती है।

शहादत व अंत्येष्टि

उपसेक्टर हनीफ के बाद ऑपरेशन विजय के दौरान जिन उच्चतम शिखरों के लिए युद्ध हुए थे उनमें से बिंदु 5810, बिंदु 5685 और रिंग कटोर सहित कुछ चोटियों पर कब्जा जमाने के लिए 13 कमाऊ बटालियन की तैनाती की गई थी। जोश इतना मातृभूमि के लिए 1997 में भर्ती होकर 2 वर्षों की सेवा के दौरान 2 सेना मेडलों से सम्मानित होने वाले कारगिल शहीद सुरेश सिंह की तैनाती 5685 बिंदु पर थी। निर्जर पहाड़ियां, ऊंचाई व दुश्मन की गोलाबारी में अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हुए शत्रु सेना से टकराई भारतीय सेना की 13 कमाऊ बटालियन। आप इस ऑपरेशन के दौरान तुरतुक में तैनात थे। 1 सितंबर 1999 को आमने–सामने की मुठभेड़ में आप शहीद हो गए थे।इन्होंने अपनी वीरता को समर्पित कर अपना तन–मन मातृभूमि के चरण कमलों में रख दिया। आपकी शहादत की सूचना सबसे पहले सरपंच रोहिताश को दी गई थी। दिनांक 2 सितंबर, 1999 को इनके पार्थिव शरीर फलों से लदा, तिरंगे में लिपटा अपने पैतृक ग्राम पहुंचा था। जिस–जिस ने सुरेश सिंह के बारे में सुना तो चल पड़ा ऐसे मातृभूमि के महारथी वीर के अंतिम दर्शन करने के लिए। इस घटना से अनजान दो पुत्रियां ममता वर्मा (2 वर्ष 6 माह), प्रीति (2 माह 15 दिन), पत्नी शर्मिला, माता–पिता व भाई महिपाल यादव बेहाल इस योग की असीम पीड़ा से। एक तरफ सभी की आखों में बहती गंगा–जमुना की धारा, वहीं दूसरी ओर अग्नि में अग्नि को एक और भारतीय थल सेना का जवान था। इस वीर ने 2 माह पहले ही ऑपरेशन मेघदूत में अपनी वीरता का जौहर दिखाने पर सेना मेडल से सम्मानित हुआ था। सेना की तरफ से विधिवत रूप से 21 बंदूकों की सलामी सुरेश सिंह को दी गई। इस पावन वेला पर पद्म श्री शीशराम ओला, डॉक्टर बी. डी. कल्ला, विधायक हनुमान प्रसाद के साथ पूरा प्रशासन इस वीर को नमन करने पहुंचा था।

प्रतिमा अनावरण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ग्राम सहड़ से निकलते ही मार्ग के दाए और प्रतिमा के रूप मे खड़ा शहीद सुरेश सिंह निरंतर मातृभूमि की रक्षा का युवा पीढ़ी को संदेश दे रहा है। सिर पर टोपी, तना हुआ सीना, दोनों हाथों में पकड़े बंदूक, कमर पर बेल्ट व पैरों में जूते पहने, तांबे की प्रतिमा बढ़ती गर्मी के हर मौसम मे राह जाते प्रत्येक राहगीर को ऑपरेशन विजय की याद दिलाती है। ताम्र प्रतिमा का निर्माण शहीद के परिवार ने करवाया। इसके अनावरण समारोह मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, शीशराम ओला, डॉक्टर चंद्रभान, डॉक्टर जितेंद्र, शिवदान सिंह (विधायक हरियाणा), साध्वी बहन कलावती मौजूद थे।

प्रतिमा के नीचे लिखा है – "ताम्र प्रतिमा कारगिल शहीद सुरेश सिंह शहीद नंबर 4190932 वाई सुरेश सिंह सुपौत्र कस्तुरी देवी, स्वर्गीय श्री भोजाराम व जगनाराम और पुत्र श्रीमती श्रवण देवी एवं रगलाल यादव का जन्म 31 दिसंबर, 1976 को सहड गांव में हुआ आप दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् अपनी रुचि के अनुसार जून 1997 में भारतीय सेना की 13 कमाऊ रेजिमेंट मे देश की रक्षा के लिए भर्ती हुए तथा ऑपरेशन विजय के दौरान कारगिल में पाकिस्तानी दुश्मनों से साहसपूर्वक लड़ते हुए 1 सितंबर 1999 को 5675 न. चोटी पर वीरगति को प्राप्त हुए आपको शत–शत नमन।"

राजकीय सहायता

भारतीय थल सेना मे ऑपरेशन विजय के दौरान शहीद सैनिकों को राजकीय सहायता प्रदान की गई थी। शहीद सुरेश सिंह के परिवार को राज्य सरकार द्वारा 5 लाख **रुपये** की नकद सहायता राशि प्रदान की गई थी। राज्य सरकार द्वारा ग्राम की प्राथमिक स्कूल का नाम "शहीद सुरेश सिंह प्राथमिक विद्यालय,सहड़" वर्ष 2000 मे किया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गया। यह विद्यालय बंद होने पर ग्राम की माध्यमिक स्कूल का नामकरण वर्ष 2017 में "शहीद सुरेश सिंह माध्यमिक विद्यालय" किया गया। केंद्र सरकार द्वारा जयपुर जिले में चौमू के पास जयपुर–सीकर मार्ग पर भारतीय पेट्रोल पंप दिया गया। जिसके लिए परिवार द्वारा 20 लाख रुपए की लागत से एक बीघा (1.4 हेक्टर) जमीन को खरीदा गया। वर्तमान में वीरांगना शर्मिला देवी की वेतन 26000/– रुपये है। जो की शहादत के समय 2700/–रुपये था। इनको राज्य सरकार द्वारा बस ट्रेन में यात्रा के दौरान मुफ्त यात्रा का प्रावधान रखा गया है। इसके अलावा भारतीय थल सेना की 13 कमाऊ रेजीमेंट द्वारा समय–समय पर परिवार से कुशलता के समाचार लिए जाते हैं। 13 कमाऊ रेजीमेंट में होने वाले उत्सवों पर इनको आमन्त्रित किया जाता है। जिसमें रहने, खाने व यात्रा का खर्चा रेजिमेंट द्वारा दिया जाता है।

स्वबधता और शुन्यता परंतु एक असीम संतोष पुत्र के शहीद होने पर क्योंकि उसकी मृत्यु आदरमयी हो गई। अपने शौर्यवान पति पर गर्व है वीरांगना शर्मिला देवी को।वह पीठ दिखाकर नही भागा हर परिस्थितियों से जंग करते हुए आपने वीरोचित कार्य किया। संपूर्ण प्रदेश–देश आपके त्याग को श्रद्धावनत् हो वंदन करता है।

सन्दर्भ सूची

1. व्यक्तिगत सर्वे, दिनांक 5 सितम्बर, 2018 समय– सायंकाल 5:30
2. शेखावाटी सच्चा अखबार, शेखावाटी सपना, क्षेत्र प्रकाशन 2/6 [illegible] आवासन मण्डल, झुंझुनू पृ.सं. 36
3. कारगिल के शहीदों की शौर्य गाथाएं, माधवानन्द सारस्वत, प्रकाशक–राजेश शिक्षा परिषद, संस्करण प्रथम 2015 पृ.सं.–103
4. व्यक्तिगत सर्वे, साक्षात्कार – महिपाल यादव उम्र– 39 वर्ष, दिनांक 5 सितम्बर, 2018 समय– सायंकाल 5:30
5. कारगिल एक अभूतपूर्व विजय, जनरल वी.पी. मलिक, प्रकाशक–राजपाल एण्ड सन्स, संस्करण 2017 पृ.सं.–199
6. जिला दर्शन झुंझुनू, जिला प्रशासन तथा सूचना जनसम्पर्क कार्यालय, झुंझुनू, पेज 28
7. राजस्थान पत्रिका 26 जुलाई 2020
8. राजस्थान पत्रिका 13 जुलाई 1999